International Journal of Applied Research 2023; 9(3): 199-202

International Journal of Applied Research

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 8.4
IJAR 2023; 9(3): 199-202
www.allresearchjournal.com
Received: 06-02-2023
Accepted: 10-03-2023

**शमीम हैदर**
शोधार्थी, शिक्षा-शास्त्र विभाग,
ललित नारायण मिथिला
विश्वविद्यालय कामेश्वर नगर,
दरभंगा, बिहार, भारत

**डॉ० शगुफ्ताह जबीं**
सहायक प्राध्यापिका, दूरस्थ शिक्षा
निदेशालय, ललित नारायण मिथिला
यूनिवर्सिटी, कामेश्वरनगर, दरभंगा,
बिहार, भारत

**Corresponding Author:**
**शमीम हैदर**
शोधार्थी, शिक्षा-शास्त्र विभाग,
ललित नारायण मिथिला
विश्वविद्यालय कामेश्वर नगर,
दरभंगा, बिहार, भारत

# आधुनिक भारतीय शिक्षा के विशेष संदर्भ में डा० सम्पूर्णानन्द तथा आचार्य नरेन्द्रदेव के शिक्षा दर्शन के योगदान का अध्ययन

**शमीम हैदर और डॉ० शगुफ्ताह जबीं**

## सारांश

आधुनिक युग में लोगों का जीवन दर्शन फिर बदल गया। परिणामस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र में भी क्रन्तिकारी परिवर्तन होने लगे। जॉन व लॉक रूसो जैसे दार्शनिक ने पुरानी विचारधाराओं को घोर विरोध किया और इस बात पर बल दिया कि बालक के व्यक्तित्व की उपेक्षा न करके उसकी मूल प्रवृतियों को स्वतंत्रतापूर्वक विकसित होने के अधिक से अधिक अवसर प्रदान किये जाये। इससे शिक्षा में मनोवैज्ञानिक प्रगति का जन्म हुआ। जैसे-जैसे शिक्षा में इस प्रवृति का विकास होता गया वैसे-वैसे शिक्षा बालक प्रधान होती चली गयी। समय परिवर्तन के साथ-साथ जीवन के उदेश्यों में फिर परिवर्तन आया। ज्यों ही औधोगिक क्रांति आरम्भ हुई शिक्षा भी इसके प्रभाव से अछूती न रह सकी। प्रस्तुत शोध आलेख में सम्पूर्णानन्द जी एवं आचार्य नरेन्द्रदेव के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता को प्रस्तुत करने को प्रयास किया जायेगा। इनके द्वारा प्रस्तुत शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण-विधि, शिक्षक, गुरु-शिष्य सम्बन्ध, जन शिक्षा के सम्बन्ध में दिये गये विचारों तक ही परिसीमित है।

**कूटशब्द:** शिक्षा, पाठ्यक्रम, शिक्षण-विधि, शिक्षक, गुरु-शिष्य सम्बन्ध

## प्रस्तावना

शिक्षा का कोइ न कोई उदेश्य अवश्य होता है। इसीलिए शिक्षा को एक सोदेशय प्रक्रिया कहा गया है। ध्यान देने की बात है कि शिक्षा का प्रत्येक उदेश्य जीवन के उदेश्य पर आधारित होता है और जीवन का उदेश्य अपने समय के दर्शन से प्रभावित होता है। अत: शिक्षा के उदेश्य का निर्माण जीवन के उदेश्य अथवा जीवन के दर्शन के अनुसार किया जाता है। जीवन के उदेश्य को निर्धारित करना दार्शनिक है वही शिक्षा का भी उदेश्य बन जाता है। अत: भिन्न-भिन्न दार्शनिक अपनी-अपनी विचारधाराओं अथवा देश की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर जीवन के उदेश्यों अथवा लक्ष्यों को निर्धारित करते रहते हैं। जैसे-जैसे जीवन के उदेश्यों में परिवर्तन होता जाता है वैसे-वैसे शिक्षा के उद्देश्य भी बदल जाते हैं। इस दृष्टि से यह कहना कि किसी अमुक समय में शिक्षा के क्या उदेश्य होंगे यह बात उस समय जीवन के उदेश्यों पर निर्भर करती है।

जिन देशों में जनतंत्र की भावना प्रबल है वहाँ की शिक्षा के उद्देश्य जनतंत्रीय सिधान्तों व मूल्यों पर आधारित होते हैं। ऐसी ही जिन देशों में समाजवाद फैला है वहाँ शिक्षा के उदेश्यों का निर्माण साम्यवादी विचारधाराओं के अनुसार किया जाता है। इंग्लैंड तथा अमरीका में जनतंत्र फैला हुआ है। अत: इंग्लैंड में जनतंत्रीय भावना के अनुसरे व्यक्ति के विकास में बल दिया जाता है। दूसरे शब्दों में, वहाँ की शिक्षा का उदेश्य बालक के व्यक्तित्व का विकास करना है। अमरीका में प्रयोजनवादी विचारधारा से प्रभावित होते हुए शिक्षा में व्यवहारिकता तथा उपयोगिता पर बल दिया जाता है जिससे बालक समाज का एक उपयोगी अंग बन जाये। इसके विपरीत रूस तथा चीन जैसे साम्यवादी देशों में शिक्षा का उद्देश्य बालक को राज्य के लिए तैयार करना है। अंग्रेजी शासन काल में भारत को ऐसे लोगों को शासन के कार्य में सहयोग प्रदान कर सकें। अत: शिक्षा का उदेश्य केवल दफ्तरों में काम करने वाले बाबुओं का निर्माण करना रह गया। सन 15 अगस्त 1947 ई० को भारत अंग्रेजी नियंत्रण से मुक्त हुआ। अब हमारा लक्ष्य समाजवादी ढंग से जनहितकारी राज्य स्थापित करना है। अत: बदलते हुए जीवन दर्शन तथा देश की बदलती हुई आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अब हमारी शिक्षा का उदेश्य उत्तम नागरिकों का निर्माण करना है। इस प्रकार हम देखते हैं कि भिन्न-भिन्न देशों तथा भिन्न-भिन्न कालों में शिक्षा के उदेश्य भिन्न-भिन्न विचारधाराओं के अनुसार सदैव ही बदलते रहे।

सातवीं सदीं से लेकर उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध तक भारत की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थिति दयनीय होती चली गई। इसी दयनीय स्थिति से मुक्ति पाने के प्रयास में भारतीय पुनजार्गरण का प्रादुर्भाव हुआ। उन्नीसवीं सदीं में इस क्षेत्र में ऐसी अनेक विभूतियों ने जन्म लिया जो भारत के खोये हुये गौरव को प्रदान करने में सक्षम थीं। भारतीय पुनर्जागरण की ज्योति जलाने वालों में राजा राममोहन राय, दयानन्द सरस्वती, ईश्वरचन्द विद्यासागर, केशवचन्द्रसेन, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, बालगंगाधर तिलक, गोपालकृष्ण गोखले, मोतीलाल नेहरू, रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गाँधी, महामना मदनमोहन मालवीय, अरविन्द घोष, श्री सम्पूर्णानन्द एवं आचार्य नरेन्द्रदेव का प्रमुख स्थान है। शिक्षा का धर्म, राजनीति और समाज से बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। क्योंकि समाज और संस्कृति दोनों ही परिवर्तनशील है, इसलिये शिक्षा भी निरन्तर नवीन विचारधाराओं से प्रभावित होती रहती है। शिक्षा के स्वरूप के साथ ही उसके अर्थ व उद्देश्य भी परिवर्तित होते रहते हैं। अतः विभिन्न विभूतियों जैसे- राजाराम मोहनराय, दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, बालगंगाधर तिलक, मोतीलाल नेहरू, पं० मदन मोहनमालवीय, गाँधी जी, श्री सम्पूर्णानन्द एवं आचार्य नरेन्द्र ने शिक्षा के विषय में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में अपने महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किये हैं। शिक्षा के क्षेत्र में मालवीय जी ने पराधीन विचारधारा में वो महत्वपूर्ण कार्य किया है जो विश्व इतिहास में एक अद्भुत घटना है। उनकी मान्यता थी कि राष्ट्रीय चरित्र के भविष्य के लिये आने वाली पीढ़ी को शिक्षा की उत्तमोत्तम व्यवस्था प्रदान की जानी चाहिये और राष्ट्र के विविध धर्मावलम्बियों में राष्ट्रीयता एवं देश भक्ति की भावना शिक्षा द्वारा विकसित की जानी चाहिये। यही कारण है कि काशी हिन्दू विश्वविद्यलाय राष्ट्रीय आन्दोलन का केन्द्र बिन्दु था। सम्पूर्णानन्द जी शिक्षा के माध्यम से ऐसे ”व्यक्ति“ के निर्माण के पक्षपाती थे, जो चरित्रवान होने के साथ-साथ आर्थिक, प्राविधिक, राजनीतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण हो। वह अपनी जीविका प्राप्त करने की सामथ्र्य रखता हो। उसे जीविका प्राप्त करने के लिये दर-दर की ठोकरें न खानी पड़े। आचार्य नरेन्द्रदेव की मान्यता है कि यदि शिक्षा द्वारा इस प्रकार के व्यक्ति का निर्माण नहीं होता तो वह शिक्षा निरर्थक और निर्जीव है। आचार्य नरेन्द्रदेव शिक्षा व्यवस्था के व्यावहारिक तथा जीविकोपार्जन पर आधुनिक शिक्षा के पक्षधर थे। शिक्षा के आमूल चूल परिवर्तन सम्बन्धी उनके अनेक विचार युग की मांग के अनुसार प्रगतिशील एवं आधुनिक हैं।

## सम्पूर्णानन्द

डॉ. संपूर्णानंद ने प्रत्येक स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया और हर बार जेल गये। 1927 में वे स्वराज्य पार्टी के टिकट पर प्रांतीय विधान परिषद के सदस्य चुने गये। 1937 में प्रदेश की विधान सभा के लिए उनका निर्वाचन हुआ। गोविंद बल्लभ पंतजी के प्रथम मंत्रिमण्डल के सदस्य प्यारे लाल शर्मा के त्यागपत्र देने पर संपूर्णानंद जी को शिक्षा मंत्री के रूप में मंत्रि परिषद में लिया गया। उन्होंने गृह, अर्थ तथा सूचना मंत्री के रूप में भी काम किया। गोविंद बल्लभ पंत के केंद्र सरकार में चले जाने पर 1955 में डॉ. संपूर्णानंद उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने और 1961 में उन्होंने इस पद से इस्तीफा दे दिया। 1962 में उन्हें राजस्थान का राज्यपाल बनाया गया। और 1967 में इस पद से अवकाश ग्रहण किया।

सम्पूर्णानन्द जी एक महान दार्शनिक, राजनीतिज्ञ तथा नवचेतना के मूर्तिमान युगपुरुष थे। सम्पूर्णानन्द जी भारतीय इतिहास की उन गिनी चुनी महान विभूतियों में से हैं जो राष्ट्र

को एक नवीन दिशा की ओर ले जाते हैं। सम्पूर्णानन्द जी ऐसे चिन्तक थे जिन्होंने ऐसे आधारभूत सिद्धान्त प्रस्तुत किये जिनमें मानव जाति के परम लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। उन्होंने मानव जीवन के अनेकों आदर्शों एवं पहलुओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा के विभिन्न उद्देश्य बताये। सम्पूर्णानन्द जी ने शिक्षा पद्धति के माध्यम से आत्म-सम्मान एवं स्वाबलम्बन का पाठ पढ़ाया।

डॉ. संपूर्णानंद की इतिहास, पुराण, दर्शन, राजनीति, समाजशास्त्र आदि में गहरी पैठ थी। आध्यात्मिक विषयों में भी उनकी बड़ी रुचि थी। वे समाजवादी विचारों के व्यक्ति थे और 1934 में कांग्रेस के अंदर ‘समाजवादी पार्टी’ के गठन में आचार्य नरेंद्र देव के साथ उनका भी प्रमुख हाथ था। वे तीन बार उत्तर प्रदेश कांग्रेस के सचिव रहे। 1940 के पुणे हिंदी साहित्य सम्मेलन की उन्होंने अध्यक्षता की। अपने मंत्रित्व काल में उन्होंने हिंदी के उन्नयन के लिए अनेक योजनाएँ आरंभ कीं। ‘हिंदी समिति’ (जो अब हिंदी संस्थान कहलाती है) उन्हीं की आरम्भ की हुई है। वाराणसी का संस्कृत विश्वविद्यालय भी उन्हीं के शासन काल में बना। वे बड़े स्वतंत्र और निर्भीक विचारों के व्यक्ति थे। भाषा और अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के मामलों में उन्होंने अनेक बार नेहरू जी की नीति का सार्वजनिक रूप से प्रतिकार किया था।

## नरेन्द्रदेव

आचार्य नरेन्द्रदेव जी आदर्श शिक्षक थे। उन्हें अनेक देशों के इतिहास और अनेक युगों के दर्शन युगों के दर्शन का उच्चतम् ज्ञान था । वह जिस विषय को पढाते थे उसे वे इतना स्पष्ट, रोचक और सुगम बनाकर प्रस्तु करते थे कि विद्यार्थी उसका अर्थ सरलता से ग्रहण कर सके। इतिहास को पढ़ाते समय वह अतीत की धुंधली परिस्थितियों और ऐतिहासिक पात्रों को जीवित वास्तविकताओं के रूप में प्रस्तुत कर देते थे। भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास का सजीव चित्र वे एशिया के संघर्षों और आर्थिक परिस्थितियों की पार्श्वभूति में खींचते और एशिया के विभिन्न स्वतन्त्रता संघर्षों पर व्याख्यान देते समय वे राष्ट्रीय भावना से ऐसे अनुप्रमाणित हो जाते और उनकी वाणी में ऐसा चमत्कार पैदा हो जाता कि जिससे उनके श्रोताओं को ज्ञान के साथ- साथ राष्ट्र सेवा की सद्प्रेरणा भी प्राप्त होती।

नरेन्द्रदेव जी एक आदर्श शिक्षक के साथ-साथ कुशल प्रबंधक थे। उनका प्रबंधशील और कर्त्तव्य परायणता पर आधृत था । उसमें नम्रता और दृढ़ता का समन्वय था । वह अधिकार के दम्भ और अहंकार से शून्य था । प्रशासन की अकड़ के बजाय कर्त्तवयशील व्यवहार ही उसका मूलाधार था । संस्था के अध्यक्ष की हैसियत से नरेन्द्र देव जी विद्यार्थियों के प्रशिक्षण का तथा कार्यालय के काम का विशेषतः हिसाब का समुचित निरीक्षण करते रहते थे। वे दसरे अध्यापकों को जितना प्रशिक्षण का कार्य सौंपते उससे कहीं अधिक स्वयं करते और आशा करते कि वे सब अपना कार्य ठीक ढंग से करेगे। वे व्यवहार में अत्यन्त कोमल के साथ- साथ अनुशासन में दृढ़ थे।

आचार्य नरेन्द्रदेव जी के लिए विद्यापीठ एक कुटुम्ब के समान था । अध्यापक, विद्यार्थी, कार्यकर्त्ता सभ से उनके मधुर संबंध थे। वे विद्यार्थियों के मानव व्यक्तित्व का करते और उनसे बहुत प्रेम करते थे । वे उनके शिक्षक ही नहीं मित्र और मार्ग दर्शक भी थे। उन्हीं से सबको नेतृत्त्व मिलता था, प्रेरणा मिलती थी, साहस और उत्साह मिलता था।

आचार्य नरेन्द्रदेव जी मुख्यतः विद्यापीठ के माध्यम से ही वे राष्ट्र की सेवा करते रहे। उन्होंने विद्यापीठ के कुलपति के पद को भी वर्षो सुशोभित किया। वहीं नरेन्द्रदेव जी ने अपने ज्ञान को परिपक्व किया तथा उच्चकोटि के विचारक और राजनीतिज्ञ की क्षमता प्राप्त की। वहाँ ही उन्होंने बौद्ध दर्शन, उपनिषद तथा एशिया की क्रान्ति की हलचलों का भी अध्ययन किया। वहाँ ही उन्होंने विद्वता, मानवता और कर्त्तव्य परायणता से बहुत से नवयुवक कार्यकर्ताओं को देश सेवा के योग्य बनाया।

सन् 1919 ई. में जलियावाला बाग नरमेध के बाद देश में प्रतिवर्ष अप्रैल के दूसरे सप्ताह में राष्ट्रीय सप्ताह मनाया जाने लगा था । काशी विद्यापीठ में प्रतिवर्ष यह सप्ताह मनाया जाता था, और आचार्य नरेन्द्रदेव इसके कार्यक्रमों में बड़े मनोयोग से भाग लिया करते थे।

आचार्य नरेन्द्रदेव जी को सन् 1921 ई. मे प्रान्तीय काँग्रेस कमेटी का सदस्य बनाया गया । ‘इण्डिपेन्डेण्ट’ नामक समाचार पत्र के 21 जून 1921 ई. के अंक में प्रकाशित समाचार के अनुसार पं मोतीलाल नेहरू प्रान्तीय काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए और कार्यकारिणी में फैजाबाद मण्डल का प्रतिनिधित्व करने के लिए आचार्य नरेन्द्रदेव तथा गोपल सहाय को सदस्य बनाया गया।

सन् 1926 ई. का वर्ष नरेन्द्रदेव जी के जीवन में बड़ा महत्त्व रखता है । उस वर्ष वह डॉ. भगवानदास के स्थान पर काशी विद्यापीठ के अध्यक्ष हुए थे। उसी वर्ष उत्तर प्रदेश काँग्रेस कमेटी का कार्यालय प्रयाग से चलकर काशी पहुँचा तथा काशी विद्यापीठ से संचालित होने लगा। उसी वर्ष समाजवादी संस्कृति से अभिभूत पं. जवाहरलाल नेहरू से उनका निकट

सम्पर्क हुआ। सन् 1926 ई. ने उन्हें उस प्रकार समय के उस चौराहे पर ले जाकर खड़ा किया, जहाँ से उन्हें शिक्षा तथा शिक्षण के अतिरिक्त राजनीति की ओर ले जाने वाला मार्ग दिखाई पड़ा। सन् 1929 ई. में 26 सितम्बर को काशी विद्यापीठ के दीक्षान्त समारोह में अध्यक्षता करने के लिए काशी पहुँचे गाँधी जी ने कहा था- नरेन्द्रदेव वो रत्न है जिन्हें बहुत पहले ही जान लेना चाहिए था।

## निष्कर्ष

सम्पूर्णानन्द जी एवं नरेन्द्रदेव जी के शैक्षिक विचारों का भारत की वर्तमान परिस्थितियों की दृष्टि से गहनता से विवेचनात्मक अध्ययन किया गया तथा यह पाया गया कि सम्पूर्णानन्द जी एवं नरेन्द्रदेव जी का जीवन-दर्शन एवं शिक्षा का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत, गहन, गम्भीर तथा सूक्ष्म है। सम्पूर्णानन्द जी एवं नरेन्द्रदेव जी सैद्धान्तिक शिक्षा के साथ-साथ व्यवहारिक शिक्षा पर भी बल दिया है। इन्होंने ने स्त्री-शिक्षा पर अत्यन्त जोर दिया तथा समाज एवं राष्ट्र की उन्नति के लिए स्त्री शिक्षा को आवश्यक माना है। इनके अनुसार जन शिक्षा पर बल देते हुये निःशुल्क शिक्षा को महत्वपूर्ण बताया है। सम्पूर्णानन्द जी एवं नरेन्द्रदेव जी ने शिक्षा के माध्यम से देशभक्ति, राष्ट्रीय-प्रेम व विश्वबन्धुत्व की भावना का विकास माना है। सम्पूर्णानन्द जी एवं नरेन्द्रदेव जी ने गुरू और शिष्यों के बीच मधुर सम्बन्धों का होना आवश्यक बताया है, और कहा है कि शिक्षक को समाज का आदर्श व्यक्तित्व वाला व्यक्ति तथा सत्य-निष्ठ आचरण करने वाला होना चाहिए। सम्पूर्णानन्द जी एवं नरेन्द्रदेव जी शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य मानव जीवन का सर्वांगीण विकास करना माना है।

## संदर्भ

1. डॉ० दुबे, रमाकान्त, विश्व के कुछ महान शिक्षा शास्त्री (मीनाक्षी प्रकाशन दिल्ली)
2. डॉ० सम्पूर्णानन्द थाट्स ऑफ एजूकेशनल एण्ड सम एलाइड प्राब्लम्स् (लेख- यूनिवर्सिटी ऑटोनामी एण्ड एजूकेशन रिफोर्म) जनवरी 1959.
3. डॉ० सम्पूर्णानन्द, थाट्स ऑफ एजूकेशनल एण्ड सम एलाइड प्राब्लम्स् (लेख- आर्ट एण्ड आर्टिस्ट) जनवरी 1959.
4. आचार्य नरेन्द्र देव, राष्ट्रीयता और समाजवाद, ज्ञानमंडल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 15-16
5. ए. अप्पादोराय इंडियन पॉलिटिकल थीकिंग इन द ट्वेन्टीयथ सेन्चुरी, कलकत्ता, 1971, पृ. 45
6. रिपोर्ट ऑफ द सेकण्ड नेशनल कॉन्फ्रेन्स ऑफ द प्रजा सोशलिस्ट गया ( गया, 1955)